

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

**BHDC-133**

**स्नातक उपाधि कार्यक्रम ( सी. बी. सी. एस. )**

**( बी. ए. जी. )**

**सत्रांत परीक्षा**

**जून, 2022**

**बी.एच.डी.सी.-133 : आधुनिक हिन्दी कविता**

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

---

**नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 12×3=36

(क) मुँह जब लागै तब नहिं छूटै।

जाति मान धन सब कुछ लूटै।

पागल करि मोहि करे खराब।

क्यों सखि साजन नहिं सराब।

भीतर-भीतर सब रस चूसै।

हाँसि हाँसि के तन मन धन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेज।

क्यों सखि साजन नहिं अंग्रेज।

**P. T. O.**

- (ख) किसलय-कर स्वागत-हेतु हिला करते हैं,  
 मृदु मनोभाव-सम सुमन खिला करते हैं।  
 डाली में नव फल नित्य मिला करते हैं,  
 तृण-तृण पर मुक्ता भार झिला करते हैं।  
 निधि खोले दिखला रही प्रकृति निज माया,  
 मेरी कुटिया में राज-भवन मन भाया।
- (ग) जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,  
 ढीले अपनी कोमल काया,  
 नील नयन से ढुलकाती हो,  
 ताराओं की पाति घनी रे।  
 जिस गंभीर मधुर छाया में—  
 विश्व चित्रपट चल माया में—  
 विभुता विभु सी पड़े दिखाई  
 दुःख-सुख वाली, सत्य बनी रे।
- (घ) वह आता—  
 दो टूक कलेजे के करता पछताता  
 पथ पर आता।  
 पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,

चल रहा लकुटिया टेक,  
 मुट्टो-भर दाने को-भूख मिटाने को  
 मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता—  
 दो टूक कलेजे के करता पछताता  
 पथ पर आता।

(ड) पथ को न मलिन करता आना,  
 पद-चिह्न न दे जाता जाना,  
 सुधि मेरे आगम की जग में  
 सुख की सिहरन हो अंत खिली  
 विस्तृत नभ का कोई कोना,  
 मेरा न कभी अपना होना,  
 परिचय इतना इतिहास यही  
 उमड़ी कल थी मिट आज चली !

2. भारतेन्दुयुगीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश  
 डालिए। 16

3. द्विवेदी युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

16

4. मैथिलीशरण गुप्त के इतिहास-बोध और मानवतावादी दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए। 16
5. रामनरेश त्रिपाठी के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए। 16
6. छायावाद के प्रमुख कवियों और उनके रचना-संसार पर प्रकाश डालिए। 16
7. जयशंकर प्रसाद की सौन्दर्य चेतना को रेखांकित कीजिए। 16
8. 'निराला' काव्य की अन्तर्वस्तु को स्पष्ट कीजिए। 16
9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए :  
2×8=16

(क) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति

(ख) प्रतापनारायण मिश्र

(ग) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(घ) छायावाद की पृष्ठभूमि